रात्रिक्लास 12/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

प्रदर्शनी लगाने से मनुष्य आपे ही आते रहेंगे। बाप का परिचय पावेंगे और देखेंगे बाप से यह वरसा मिलता है तो दिलचस्पी होगी। स्थापना तो होनी ही है जरूर। प्रदर्शनी अच्छी लगानी चाहिए। जो मनुष्य देखकर समझें। समझाने वाले भी अच्छे महारथी हजार, 12 सौ हों तो तुम्हारी स्थापना बहुत अच्छी हो जाये। ढेर गांव है। तुमको निमंत्रण मिलते जावेंगे। गांव में तो पैगाम देना ही है। मैसेन्जर, पैगम्बर तो हो ही तुम। मामेकं याद करो यह मैसेज हुआ ना। गांव2 में देना है। पिछाड़ी में तुम्हारी जोर से सर्विस चलेगी। तुम बताते जाते हो थोड़ा सा समय है। अभी रिहर्सल होती रहती है। तुम भी अपने को याद की यात्रा में पक्के करते रहो। बाप को याद कर बहुत खुश होते हैं। जितना याद उतना ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। जितनी सर्विस वृद्धि को पाती रहेगी तुमको बहुत खुशी होगी। तुम ओपीनीयन जो लिखवाते हो वह सभी अच्छा है। छपानी चाहिए जो बहुत हो जावे सर्विस जोर भरनी ही है। दिलचस्पी से पुरुषार्थ करते रहो। घर में बैठे तुम दिल नहीं होगी। सर्विस करने में खुश भी होते हैं। प्रदर्शनी वा म्युजियम खोलते जाओ। राजधानी तो स्थापन होनी ही है। यह पक्का निश्चय कर सैम्पलिंग लगाते जाओ। वृद्धि को पाते रहेंगे। ऐसे नहीं कि सर्विस बढ़ती है यह ईश्वरीय मिशन है। बाकी सभी है आसुरी मिशन। रामराज्य की मिशन स्थापन(ी) हो रही है। वह आसुरी सम्प्रदाय यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय। तुम जानते हो बाकी सभी विनाश हो जाने वाले हैं। और यह ईश्वरीय सम्प्रदाय की स्थापना हो जावेगी। आगे चल समझते जावेंगे। तुम बच्चों को भी खुशी रहेंगी। कहेंगे तुमने रास्ता तो बहुत अच्छा सुनाया। इसलिए गायन भी है अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप–गोपियों से पूछो। खुशी पढ़ाई में ही होती है। तुम जानते हो हमको भगवान पढ़ाते हैं। कम बात है क्या। भगवानुवाचः, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। भगवान देहधारी को नहीं कहा जाता। भगवान तो एक ही है। सर्व की सद्गति दाता। मनुष्य सर्व की सद्गति कर न सके। तुमने अभी जाना है। बाप कहते हैं तुम मेरे द्वारा सभी कुछ जान जावेंगे। सारे झाड़ के आदि मध्य अन्त को जान जावेंगे। गायन भी है ज्ञान भक्ति और वैराग्य। वैराग्य पुरानी दुनिया। पहले2 अलफ। यह पक्का समझ लेना। बाप को जानने से सारे मनुष्य सृष्टि झाड़ को वा सृष्टि चक्र को जान जावेंगे। झाड़ से चक्र क्लीयर है। कोई कुछ समझ नहीं सकते। चक्र पर तुम अच्छा समझा सकते हो। तुम बच्चों को अच्छी तरह से नॉलेज आ गई होगी। हम पतित से पावन कैसे बनें। रावण राज्य में कितना किचड़ा है। काम का नशा कम नहीं है। बहुत फ़ेल होते हैं। समझते भी हैं फेल होने से पद भ्रष्ट हो जावेंगे; परन्तु रावण भी कम ताकत वाला नहीं है। बाबा जो कहते हैं अपने दिल से पूछना है। वह बरोबर है ना। अभी बाप कहते हैं पिछाड़ी में और कोई की याद न आये। हम आत्मा हैं अभी वापस जाना है। शरीर तो पुराना है अपने से ऐसी2 बातें करनी है। यह याद रखना है गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए मामेकं याद करना है। यह मैं जानता हूँ कब्रिस्तान बनना है। हम आत्मा हैं शरीर तो बूढ़ा है। बाबा ने कहा है भाई2 समझो। आत्मा को ही देखो। और सभी चीज़ से ममत्व छोड़ देना है। यह सभी छी–छी तमोप्रधान दुनिया है। इनसे दिल हट जावेगी। तुम नज़दीक आवेंगे तो तुमको बहुत सा॰ होंगे मदद के लिए। बुद्धि योग नई दुनिया तरफ लगा पड़ा है। विनाश होने वाली दुनिया से क्या दिल लगानी है। देह सहित सभी कुछ खलास हो जावेंगे। उठते–बैठते–चलते बुद्धि में यही याद रहे। यहां तो और कोई गोरख धंधा है नहीं। वहां तो सभी याद आवेंगे। यह करना है, वहां जाना है। यहां तो कुछ है नहीं। हम आत्माएं सभी भाई2 हैं। चक्र तो बहुत बार समझाया है। जब कोई भी आवे तो बोलो, बाबा हमको पढ़ाते हैं। कहते हैं, अपने को आत्मा समझो। देह के सभी धर्म छोड़ मामेकं याद करो। तो अन्त मते सो गति हो जावेगी। जो औरों की सर्विस करते हैं वही ऊँच पद पाते हैं। यह तो तुम जानते हो पुरानी खलास होनी है। यह न रहेंगे। भारत में भी बहुत मर जावेंगे। मुख्य बात है सतोप्रधान पावन बनना है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।